5.2. संस्कृत अनुवाद के लिए आवश्यक ज्ञान

संस्कृत में अनुवाद करने के लिए व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक है जो निम्नलिखित प्रकार से है–

1) पुरुष परिचय
2) वचन परिचय
3) लिंग परिचय
4) क्रिया परिचय
5) लकार परिचय
6) अनुवाद के सामान्य नियम

5.2.1. पुरुष परिचय

वे संज्ञा या सर्वनाम शब्द जो बात कहने वाले, सुनने वाले या जिसके विषय में बात की जा रही है, के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें पुरुष कहते हैं। पुरुष तीन होते हैं– प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष। प्रत्येक पुरुष के तीन वचन होते हैं– एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। इसका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है–

1) **प्रथम पुरुष**–जिसके विषय में बात की जाती है वह प्रथम पुरुष होता है। इसमें सभी संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है। **यथा**–
   i) बालकः पठति। (बालक पढ़ता है।)
   ii) सा लिखति। (वह लिखती है।)

2) **मध्यम पुरुष**–जिससे प्रत्यक्ष रूप से बातें की जाती हैं, वह मध्यम पुरुष होता है। इसमें केवल युष्मद् (तुम) सर्वनाम का प्रयोग होता है। **यथा**–
   i) त्वं गच्छसि।
      तुम जाते हो।
   ii) यूयं क्रीडथ।
      तुम सब खेलते हो।

3) **उत्तम पुरुष**–जो बातें कहने वाला व्यक्ति होता है वह उत्तम पुरुष होता है। इसमें केवल अस्मद् (मैं) सर्वनाम का प्रयोग होता है। **यथा**–
   i) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
      अहं पुस्तकं पठामि।
   ii) हम दोनों खाना खाते हैं।
      आवां भोजनं खादावः।

पुरुष चक्रम्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः (वह) पुल्लिंग	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)

	सा (वह) स्त्रीलिंग अयं (यह) पुल्लिंग रामः (राम) पुल्लिंग	ते (वे दोनों) इमौ (ये दोनों) रामौ (दो राम)	ताः (वे सब) इमे (ये सब) रामाः (बहुत से राम)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

5.2.2. वचन परिचय

संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को वचन कहते हैं। संस्कृत में तीन वचन होते हैं– एकवचन, द्विवचन, बहुवचन। इसका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है–

1) **एकवचन**–एक वस्तु या एक व्यक्ति का बोध कराने वाले शब्द में एक वचन होता है। **यथा**– रामः, मृगः।

प्रयोग–

i) वर्ण, गण, समुदाय तथा चतुष्टयम् आदि शब्द बहुवचन बोधक होते हुए भी एकवचन में प्रयोग किए जाते हैं। **यथा**–
शिक्षक पढ़ाते हैं। शिक्षकः पाठयति।

ii) द्वयम्, युगलम्, युग्यम् शब्द द्विवचन का बोध कराते हैं, लेकिन उनका प्रयोग एकवचन में किया जाता है। **यथा**– चरण युगलम्, भ्रातृद्वियम् आदि।

iii) उन समस्त पदों में जो समाहार द्विगु समास का बोध कराते हैं, उनमें एकवचन होता है। **यथा**– त्रिलोकी रक्षति।

iv) जाति के अर्थ में एकवचन का प्रयोग होता है।

2) **द्विवचन**–दो वस्तुओं या दो व्यक्तियों का बोध कराने वाले शब्दों में द्विवचन होता है। **यथा**–

i) दो बालक पुस्तक पढ़ते हैं।
बालकौ पुस्तकम् पठतः।

ii) दो फूल खिलते हैं।
पुष्पे विकसतः।

प्रयोग–

i) द्वन्द्व समास से बने शब्दों में द्विवचन का प्रयोग होता है। **यथा**– पितरौ गच्छतः।

ii) पति–पत्नी शब्द में द्विवचन होता है। **यथा**– अस्मिन् गृहे दम्पत्तिः निवसतः।

iii) नेत्र, पाद, हस्त (हाथ) आदि शब्दों का प्रयोग द्विवचन में होता है। **यथा**– अहं नेत्राभ्याम् पश्यामि।

3) **बहुवचन**–दो से अधिक वस्तु या व्यक्तियों का बोध कराने के लिए जो शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं, उनमें बहुवचन का प्रयोग होता है। **यथा**–
अध्यापिकाः पाठयन्ति बहुत अध्यापिकाएँ पढ़ाती हैं।

प्रयोग–

i) प्रदेशों के नाम में बहुवचनों का प्रयोग होता है।
यथा– मेरठ जिला उत्तर प्रदेश में है।
मेरठ जनपदः उत्तर प्रदेशेषु अस्ति।

ii) आदर सूचक शब्दों में बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।
यथा– प्रधानाचार्य महोदयाः अत्र प्रवचनं करोति।

iii) अक्षत (चावल), दारा (पत्नी), प्राण आदि शब्द बहुवचन व पुल्लिंग में प्रयोग किए जाते हैं। **यथा**–

a) अक्षताः एकः स्वादिष्टः भोजनः अस्ति।
चावल एक स्वादिष्ट भोजन है।

b) सीता रामस्य दाराः आसीत्।
सीता राम की पत्नी थीं।

iv) यति (जितने), तति (उतने), कति (कितने) आदि शब्द बहुवचन में प्रयोग किए जाते हैं। **यथा**–

a) अस्मिन् ग्रामे यति बालकाः तति बालिकाः अपि सन्ति।
इस गाँव में जितने बालक हैं उतनी बालिका भी हैं।

b) तव विद्यालये कति छात्राः सन्ति?
तुम्हारे विद्यालय में कितने छात्र हैं?

v) त्रि से अष्टादश तक के सभी संख्यावाचक शब्द बहुवचन में प्रयोग होते हैं। इनका लिंग विशेष्य के अनुसार होता है।

a) गृहस्य बहिः त्रयः वृक्षाः सन्ति।
घर के बाहर तीन वृक्ष हैं।

b) मालाकारः चतुरः वृक्षान् सिञ्चति।
माली चार वृक्षों को सींचता है।

5.2.3. लिंग परिचय

वे संज्ञा तथा सर्वनाम शब्द जो पुरुष, स्त्री अथवा दोनों के न होने का बोध कराते हैं, उन्हें लिंग कहते हैं। संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते हैं– पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग। इसका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है–

1) **पुल्लिंग**–जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं। **यथा**– बालकः, नरः, काकः।
   i) देव और असुरवाची शब्द पुल्लिंग होते हैं। **यथा**– देवः, असुरः।
   ii) यज्ञ, मेघ, समुद्र, शत्रु, पर्वत तथा कालवाची शब्द पुल्लिंग होते हैं। **यथा**– मेघः, पर्वतः।
   iii) 'अन्' से समाप्त होने वाले शब्द पुल्लिंग होते हैं। **यथा**– राजन्।

2) **स्त्रीलिंग**–जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हे स्त्रीलिंग कहते हैं। **यथा**– बालिका, कन्या, रमा, नदी, वधू, लता आदि।
   विंशति से नवति (20 से 90) तक संख्यावाची शब्द पुल्लिंग होते हैं।

3) **नपुंसकलिंग**–जिन शब्दों से निर्जीव पदार्थो या वस्तुओं का बोध होता है, उन्हें नपुंसकलिंग कहते हैं। **यथा**– फलम्, चक्रम्, रुप्यकम्।
   i) क्रिया विशेषण शब्द प्रायः नपुंसकलिंग होते हैं। **यथा**– शीघ्रम्, दूरम्
   ii) राक्षस, अहन्, दिन आदि शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।
   iii) त्व, क्त, प्रत्ययान्त नपुंसकलिंग होते हैं। **यथा**– महत्त्वम्, रक्तम्, सौन्दर्यम् आदि।

5.2.4. क्रिया परिचय

क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है। **जैसे**– पठ्, हस्, क्रीड्। दूसरे शब्दों में संस्कृत में धातु को ही क्रिया कहते हैं। जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहा जाता है। क्रिया के दो भेद हैं–

1) **सकर्मक क्रिया**–जिसमें कर्म रहता है। उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। **जैसे**– सोहनः पुस्तकम् पठति। प्रस्तुत वाक्य में 'पठ' क्रिया तथा कर्म 'पुस्तक' है।

2) **अकर्मक क्रिया**–वह क्रियाएँ जिनमें कर्म नहीं होता अकर्मक क्रिया कहलाती हैं। **जैसे**– सोहनः शेते। प्रस्ततु वाक्य में 'शी' धातु है तथा कर्म नहीं है।

संस्कृत भाषा में कुछ प्रमुख क्रियाएँ

धातु	हिन्दी	धातु	हिन्दी
पठ्	पढ़ना	लभ्	प्राप्त करना, पाना
गम् (गच्छ)	जाना	वृध्	बढ़ाना
पत्	गिरना	नी (नय्)	ले जाना
हस्	हँसना	याच्	माँगना
नृत्	नाचना	अस्	होना (वर्तमान रहना)
पा	पीना	हन्	हिंसा करना, मारना
क्रीड्	खेलना	रुद्	रोना
भ्रम्	घूमना	शी	सोना
चल्	चलना	आस्	बैठना
भू (भव)	होना	विद्	जानना
नम्	नमस्कार करना	हु	हवन करना
वद्	बोलना	विभ्	डरना
दृश् (पश्य)	देखना	दा	दान देना
स्था (तिष्ठ)	बैठना	धा	धारण करना, पोषण करना
दा (यच्छ्)	देना	नश्	नष्ट होना
धाव्	दौड़ना	कुप्	क्रोध करना
जि	जीतना	आप्	प्राप्त करना
श्रु (श्री)	सुनना	इष्	इच्छा करना
प्रच्छ	पूछना	स्पृश्	छूना
कृ	करना	क्री	मोल लेना
ज्ञा	जानना	गृह	ग्रहण करना
कथ्	कहना	चुर्	चुराना
रुच्	अच्छा लगना	भक्ष्	खाना, भोजन करना
		गण्	गिनना